



एग्री आर्टिकल्स

(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)

वर्ष: 02, अंक: 03 (मई-जून, 2022)

www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

गृह वाटिका

(*रविन्द्र कुमार)

सहायक बीज प्रमाणीकरण अधिकारी, राजस्थान राज्य बीज एवं जैविक प्रमाणीकरण संस्था, बांसवाड़ा

* ramanlal940@gmail.com

गृह वाटिका में सब्जी उत्पादन का प्रचलन प्राचीन काल से चला आ रहा है इसमें सब्जी उत्पादन का मुख्य उद्देश्य यह होता है की पूरे परिवार को साल भर ताजी शाक-सब्जी मिलती रहे। इसमें शाक-सब्जियों के अलावा फल-फूल आदि को भी उगाया जा सकता है। इसी कारण इसे परिवार आधारित रसोई उद्यान अर्थात गृह वाटिका या किचन गार्डन भी कहते हैं। इस प्रकार के सब्जी उत्पादन में मुख्य ध्येय आर्थिक लाभ न होकर परिवार के पोषण स्तर को बढ़ाना तथा घर में ही ताजी शाक-सब्जी का उत्पादन करना होता है।

इसके द्वारा आर्थिक लाभ भी कमाया जा सकता है। सब्जियों का चयन परिवार के सदस्यों की इच्छा अनुसार किया जाता है। घर के चारों ओर खाली पड़ी भूमि में छोटी-छोटी क्यारियाँ बना ली जाती हैं। क्यारियाँ में फसल चक्र अपनाए जाते हैं तथा फल-फूल एवं शाक-सब्जी का उत्पादन किया जाता है। बाजार की तुलना में सस्ती एवं उत्तम गुणवत्ता वाली सब्जियाँ मिलती हैं। गृह वाटिका में उगी सब्जियों में जहरीली दवाइयों एवं कीटनाशकों का प्रभाव नहीं होता है, जो कि बाजार से खरीदी हुई सब्जियों में हो सकता है। किचन गार्डन या गृह वाटिका की सब्जियों में नकली रंग, रसायनों, एवं उन संक्रामक रोगों के जीवाणुओं की उपस्थिति का भय नहीं रहता जो बाजार से खरीदी गयी सब्जियों में हो सकता है। घर के बच्चों व युवाओं को भी यह कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी। लकड़ी के डिब्बों, गमलों, बेकार टिनो एवं मकान की छतों पर सफलतापूर्वक उगाई जा सकती है। कीमती कृषि औजारों की आवश्यकता नहीं होती है। घरेलू औजारों को प्रयोग में ला सकते हैं। इसे एक मन भावन शौक के रूप में अपनाया जा सकता है। घरेलू कार्यों में प्रयुक्त हो चुके जल का पौधों की सिंचाई में सदुपयोग हो सकता है एवं घर के कूड़े-करकट का कम्पोस्ट खाद बना कर प्रयोग किया जा सकता है। सब्जी खरीदने के लिए बाजार नहीं जाना पड़ता बल्कि घर में ही ताजी, स्वादिष्ट शाक-सब्जियाँ नियमित रूप में मिलती रहती हैं।

गृह वाटिका के लिये उचित स्थान

गृह वाटिका का स्थान घर के निकट होना चाहिए। घर के आगे या पीछे पूर्णतया खुला एवं सूर्य के प्रकाश की पर्याप्त पहुँच हो ऐसे स्थान का चयन करना चाहिए। गृह वाटिका के लिए दोमट मिट्टी जिसमें जीवाणुओं की अच्छी मात्रा हो, उपयुक्त रहती है। इसके अतिरिक्त सब्जियों को उगाने के लिए पर्याप्त सिंचाई देना भी आवश्यक होता है, अतः सिंचाई के लिए जल की उपलब्धता भी होनी चाहिए।

गृह वाटिका में क्या-क्या उगाएँ

यदि आपके पास खुला प्लाट हो तो उगाने वाली सब्जियों की कोई सीमा नहीं है। फल वाले पेड़ जैसे पपीता, नींबू व अमरुद आदि भी शाक-सब्जियों के साथ-साथ उगाए जा सकते हैं। पर्याप्त खुला स्थान नहीं है तो आप सीमित तरीके से गृह-वाटिका लगा सकते हैं जैसे टमाटर, मिर्च, सीताफल, करेला, मटर, मेथी, पालक, मूली, धनियाँ आदि। गृह वाटिका में शाक-सब्जियों को तीन बार बोया जा सकता है, जो क्रमवार निम्नलिखित हैं:-

मौसमी फल व सब्जियां—

वर्षा कालीन सब्जियां:—इन्हें जून—जुलाई में बोया जा सकता है। इस समय भिंडी, लौकी, करेला, टिंडा, तोरई, बैंगन, टमाटर, ग्वार, लोबिया, मिर्ची, अरबी आदि सब्जियों की खेती की जा सकती है।

शरद कालीन सब्जियां:—इन्हें सितंबर—अक्टूबर में उगाया जाता है। फूलगोभी, गाजर, मूली आलू, मटर, पालक, मेथी, धनियाँ, सोंफ, शलगम, पत्तागोभी, गाँठगोभी, ब्रोकली, सलाद पत्ता, प्याज, लहसुन, बाकला, बथुआ, सरसों साग आदि।

ग्रीष्मकालीन सब्जियां:—इन्हें फरवरी—मार्च में उगाया जाता है। इस समय भिंडी, ककड़ी, खीरा, लौकी, तोरई, टिंडा, अरबी, तरबूज, मतीरा, खरबूजा, बैंगन आदि सब्जियों की खेती की जा सकती है। उपरोक्त सब्जियों के अलावा गृहवाटिका में कुछ बहुवर्षीय पौधे या फलवृक्ष भी लगाने चाहिए, जैसे अमरूद, नीबू, अनार, केला, करोंदा, पपीता, अंगूर, करीपत्ता, सतावर आदि।



गृह वाटिका लगाने के लिए भूमि की तैयारी:— जिस स्थान पर गृह वाटिका लगानी हो वहाँ की मिट्टी में जल एवं वायु का प्रवाह अच्छा होना चाहिए। इसलिए गृह वाटिका लगाने से पहले भूमि को तैयार कर लेना महत्वपूर्ण है। मिट्टी जितनी भुरभुरी, कार्बनिक खाद एवं जीवांश तत्वों से भरपूर होगी, पैदावार भी उतनी ही अच्छी मिलेगी। यदि बड़े क्षेत्रफल में सब्जियाँ लगानी हो तो इसके लिए एक जुताई डिस्क हैरो तथा 2—3 जुताई मिट्टी पलटने वाले हल या कल्टीवेटर से करनी चाहिए। इसके बाद अच्छी तरह से सड़ी हुई गोबर की खाद 1—1.5 टन प्रति हैक्टेयर के हिसाब से मिट्टी में अच्छी तरह मिलानी चाहिए। घर में थोड़े स्थान में सब्जियाँ उगाने के लिए फावड़ा या कस्सी का उपयोग कर मिट्टी को अच्छी तरह से भुरभुरा कर क्यारियाँ बना लेनी चाहिए तथा गोबर की खाद को क्यारियों में डाल कर मिश्रित कर लेना चाहिए। गमले तैयार करते समय भी कस्सी या खुरपी से मिट्टी अच्छी तरह भुरभुरी कर तथा गोबर की खाद मिलाकर गमले तैयार कर लेने चाहिए।

खाद एवं उर्वरक:— खाद एवं उर्वरक का अच्छी पैदावार प्राप्त करने में अत्यधिक महत्व है। इसके लिए आवश्यक है कि मिट्टी में कार्बनिक खाद का प्रयोग हो। खाद मिट्टी की दशा सुधारती है व पौधों को आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति भी करती है। इसके लिए गृह—वाटिका के एक कोने में कम्पोस्ट खाद का निर्माण भी किया जा सकता है।

बुवाई की विधि:—उन्नत किस्म के बीजों का प्रयोग करें। उचित समय एवं सही तरीके से बुवाई के लिए सब्जी की किस्म के आधार पर निम्नलिखित दो पद्धतियों में से एक चुनें। गृह वाटिका में सब्जियाँ उगाने के लिए सब्जी की किस्म के आधार पर दो प्रकार से बुवाई की जा सकती है।

बीज द्वारा बुवाई:—मूली, शलजम, मेथी, पालक, खीरा, करेला, लौकी, कद्दू, टिंडा, सेम, भिंडी आदि सब्जियों के बीज मिट्टी में सीधे ही बोये जाते हैं। बुवाई से पहले बीजों का थाइरम या केपटान 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोपचार कर लेना अच्छा रहता है। अच्छी व जानी-मानी कृषि कंपनियों के बीज लेने पर सामान्यता बीज पहले से ही उपचारित होते हैं अतः उनका पुनः बीजोपचार करने की आवश्यकता नहीं होती है। बुवाई करने से पहले बताई गयी विधि द्वारा भूमि जुताई कर तैयार कर लेना चाहिए। खाद तथा उर्वरक की पहली खुराक सब्जी की किस्म के अनुसार निर्दिष्ट मात्रा में अंतिम जुताई के समय मिट्टी में छिड़कर देनी चाहिए तथा इसके तुरंत बाद सिंचाई करनी चाहिए जिससे उर्वरक अच्छी तरह प्रभावी हो जाए। इसके बाद ही बुवाई करनी चाहिए।

रोपाई करना:— कुछ सब्जियों जैसे टमाटर, फूलगोभी, मिर्च, बैंगन, प्याज, आदि फसले सीधे बीज द्वारा बुवाई न करके बीज उगने के बाद उस पौधे की रोपाई करने से अधिक बढ़ती है। इसलिए ऐसी फसल के लिए बीज, उचित रूप से किए जाते हैं। पुदीना, धनिया पत्ती, हरी मिर्च, अजवाइन, सौंफ इसके अलावा जीरा, तुलसी, मीठा नीम (कड़ी पत्ता) जैसे पौधे आप अपने घर में उगा सकते हैं। रोपाई करने के 1-2 दिन पहले सिंचाई देनी चाहिए इससे मिट्टी नम हो जाती है और पौधों की जड़े आसानी से बिना अधिक नुकसान के मिट्टी से बाहर निकल आती है। पौधों की रोपाई करने से पहले खेत/क्यारियाँ/थाले तैयार कर लेने चाहिए। इसके लिए पहले बताई गयी विधि के अनुसार जुताई करके तथा उर्वरक डाल कर मिट्टी को तैयार कर लेना चाहिए। उर्वरक की पहली खुराक सब्जी की किस्म के अनुसार निर्दिष्ट मात्रा में रोपाई के पहले मिट्टी में छिड़कर दे देनी चाहिए तथा इसके तुरंत बाद सिंचाई करनी चाहिए जिससे उर्वरक अच्छी तरह प्रभावी हो जायें। इसके 1-2 दिन बाद पौधों की रोपाई करनी चाहिए।

रोपाई करने के लिए 15-20 से.मी. ऊँची व 1.25 मीटर चौड़ी तथा आवश्यकतानुसार लम्बी क्यारियाँ बना ली जाती है। दो क्यारियों के बीच 30 से.मी. चौड़ी नाली छोड़ देते हैं, जिससे कि निराई-गुड़ाई व पानी की निकासी में आसानी रहती है। पौधों को शाम के समय रोपना चाहिए तथा रोपने के बाद हल्की सिंचाई देनी चाहिए।

निराई-गुड़ाई व खरपतवार नियंत्रण:—सब्जियों के पहले 40-50 दिनों तक खरपतवार मुक्त रखना आवश्यक है अतः समय-समय पर खुरपी द्वारा निराई गुड़ाई करते रहें। उर्वरक की दो अन्य खुराकें 1 महीने बाद तथा अगली खुराक समान्यता अगले 1-1.5 महीने बाद फूल आने के समय दी जाती है। इसके अतिरिक्त ऋतु एवं आवश्यकतानुसार समय-समय पर सिंचाई करते रहना चाहिए।

रोग व उनका नियंत्रण:—किचन गार्डन में लगने वाले रोगों की रोकथाम के लिए शुरुआत में ही सबसे आवश्यक पहलुओं पर ध्यान देना चाहिए। जैसे कि— बुवाई के पहले मिट्टी को किसी भी कवकनाशी से उपचारित करना। बीजों को उपचारित करना।

गृहवाटिका बनाते समय ध्यान रखे :-

- गृहवाटिका के लिए खुली धूप व हवादार छायारहित स्थान या घर के पीछे दक्षिण दिशा सवोत्तम होती है।
- सिंचाई का प्रबंध अच्छा व जल स्रोत पास में होना चाहिए।
- अच्छे जल निकास वाली दोमट भूमि इस के लिए उपयुक्त होती है। सड़ी हुई गोबर की खाद की सहायता से खराब भूमि को भी सुधार कर गृहवाटिका के योग्य बनाया जा सकता है।
- गृहवाटिका का आकार व माप, स्थान की उपलब्धता, फल व सब्जियों की आवश्यकता और समय की उपलब्धता आदि पर निर्भर करता है। चौकोर आकार की गृहवाटिका सवोत्तम मानी जाती है।
- अगर वाटिका खुली जगह में बना रहे हैं तो उस के चारों ओर लकड़ी, बांस आदि की बाड़ बनानी चाहिए। जमीन की 10-15 सेंटीमीटर गहराई तक खुदाई करें व कंकड़ पत्थर निकाल कर मिट्टी को भुरभुरा बना कर आवश्यकतानुसार क्यारिया बना लेनी चाहिए।
- क्यारियों में सड़ी गोबर की खाद व जैविक खाद आदि का प्रयोग करना चाहिए।
- सीधे बुवाई की जाने वाली व नर्सरी द्वारा लगाई जाने वाली सब्जियों को लगाने से पूर्व जैव फफूंद नाशी व जैव कल्चर से उपचारित करने के बाद उचित दूरी पर बनी कतारों में बोना चाहिए।

- क्यारियों में समय-समय पर सिचाई व निराई गुड़ाई करते रहना चाहिए। गृहवाटिका में कीटों के नियंत्रण व बीमारियों से बचाव के लिए रासायनिक दवाओं का कम से कम प्रयोग करना चाहिए, नीमयुक्त व जैविक दवाओं का ही प्रयोग करना चाहिए।
- उपलब्ध जगह का अधिक से अधिक प्रयोग करने के लिए बेल वाली सब्जियों जैसे लौकी, तोरई, करेला, खीरा आदि को दीवार के सहारे उगा कर छत या बाड़ के ऊपर ले जा सकते हैं।
- जड़ वाली सब्जियों जैसे मूली, शलगम, गाजर व चुकुंदर को गृहवाटिका की क्यारियों की मेड़ों के ऊपर बुआई कर के पैदा किया जा सकता है।

गृह वाटिका के लाभ

- घर के चारों ओर खाली भूमि का सदुपयोग हो जाता है.
- मन पसंद सब्जियों की प्रप्ति होती है.
- परिवारिक व्यय में बचत होती है.
- ताजी हर्ब मिलना
- पेस्टिसाइड रहित साग-सब्जियां
- सस्ता
- स्वास्थ्यवर्धक होना
- तनाव से मुक्ति
- सकारात्मक परिवर्तन